अध्याय – ५

दिल्ली एवं फरुखाबाद घराने में कलाकारों का योगदान

स्वतंत्र तबला वादन में दिल्ली एवं फरुखाबाद घराने में जो सफलता प्राप्त हुई उसका श्रेय दोंनो घरानो के प्रारंभ से लेकर वर्तमान समय के सभी मुर्धन्य कलाकारों को जाता है । आज भी दोंनो घराने जीवीत है और अपनी निजी परंपरा को आगे ले जा रहे है । अतः इस अध्याय में शोधार्थी ने दोंनो घरानो के कलाकारों की जीवनीयाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । जिस में दिल्ली घराने में (१) उ. नत्थू खाँ (२) उ. ईनाम अली खाँ (३) उ. शफात अहमद खाँ (४) उ. जनाब गुलाम हैदर (५) उ. बोली बख्श खाँ (६) उ. गामी खाँ (७) पं. सुभाष निर्वाण (८) पं. सुधीर माईणकर (९) पं. प्रेम वल्लभ (१०) श्री प्रविण करकरे और (११) पं. उमेश मोघे जी का समाविष्ट किया गया है । तथा फरुखाबाद घराने में (१) उ. हाजी विलायत अली खाँ (२) उ. मुनीर खाँ (३) उ. निजामुद्दीन खाँ (४) पं. अनिन्दो चटर्जी (५) पं. सुरेश तळवलकर (६) उ. अमीर हुसैन खाँ (७) पं. अरविंद मुळगाँवकर (८) उ. अहमदजान थिरकवाँ (९) पं. पंढरीनाथ नागेशकर (१०) पं. किरण देशपांडे (११) पं. सुरेश (भाई) गायतोंडे (१२) उ. जहाँगीर खाँ (१३) उ. करामतउल्ला खाँ (१४) डॉ. आबान मिस्त्री (१५) पं. शंकर घोष (१६) पं. नयन घोष और (१७) श्री आमोद दंडगे जी का समाविष्ट किया गया है ।

५ः१ दिल्ली घराने के कलाकारों का योगदान

५ः१ः१ उ. नत्थू खाँ ः

''उ. नत्थू खाँ दिल्ली घराने के श्रेष्ठ तबलावादक उ. बोलीबक्ष के सुपुत्र थे । सन. १९३० के आसपास दो महान तबलावादक अपने अलग–अलग विशेषताओं से तबला जगत को प्रभावित कर रहे थे । इन मेसे एक थे उ. मुनिर खाँ, जिन्होंने विभिन्न बाजो की असंख्य रचनाएँ २४ गुरुओं से प्राप्त कर के उन्हे आत्मसात किया था । उस जमाने के प्रभावित तबलावादक उ. थिरकवाँ खाँ साहब, उ. अमिरहुसेन खाँ साहब एवं उ. हबिबुद्दिन खाँ साहब थे

। यह तिनो कलाकार उ. मुनिर खाँ साहब के शिष्य थे, परंतु तिनों वादक उ. नत्थू खाँ साहब के वादन से एवं उनके विचारों से पूर्णतः प्रभावित हो चुके थे । उ. हबिबुद्दिन खाँ साहब ने तो उ. नत्थू खाँ साहब का गंडा भी बांधा था ।

पूरब शैली के मंत्रमुग्ध करने वाले उ. अमिरहुसेन खाँ साहब ने उ. नत्थू खाँ साहब का तबला सुनने पर दिल्ली वादन शैली को हस्तगत करने का निश्चय करके दो ऊंगलीयों का प्रचंड रियाज किया था । दिल्ली घराने के तबला में विस्तारक्षम रचनाएँ किस प्रकार से प्रस्तुत की जाय तथा उसका विस्तार किस तरह का हो उस विषय में उ. नत्थू खाँ साहब माहिर थे । उनकी प्रतिभा इतनी बडी थी की एक ही रचना को रोज नये रूप में प्रस्तुत करते थे । उनका अत्यंत प्रिय कायदा 'धातिट धातिट धाधा तिट धागे तिनाकिना' था । इस कायदे के अलग-अलग नये रूप में बजाते थे और विद्धवान श्रोता भी उस रूप को नया कायदा मानकर स्विकार कर लेते थे । एक ही कायदे के बोल को लेकर नई रचना बनाते थे । दिल्ली घराने का अनुशासन, उसकी विचार – परंपरा, उनकी असामान्य प्रतिभा तथा सौन्दर्य विषयक दृष्टिकोण के कारण उ. नत्थू खाँ साहब जो रचना करते थे वह दिल्ली की ही असली रचना प्रतित होती थी । उनके द्वारा की गई रचनाओं का विस्तार पूरी तरह में घरानेदार और कलात्मक हुआँ करता था । उनकी इस वादन शैली का प्रभाव संपूर्ण भारतभर में था । उनके बारे में उ. हबिबुद्दिन खाँ साहब विधान करते थे की 'हमारे नत्थू खाँ साहब तबला बजाते समय सोने की स्याही से तबला लिखते थे' अर्थात उ. नत्थू खाँ साहब बजाते थे वह अन्य वादक एवं विद्यार्थी के लिये उसे समझना कठिन था ।

उ. नत्थू खाँ अत्यंत तैयारी में तबला नहीं बजाते थे । उनका तबला बहुतांश मध्यलय में बजता था । किन्तु दाये-बाये का वजन तथा संतुलन, हाथ का निकास, उनकी कल्पना, सोच अदभूत थी । अतः संगीत जगत में उ. नत्थू खाँ साहब एक प्रेरणादायी स्थान रखते है । दिल्ली घराने का अनुशासन, उसकी विचार-परंपरा, उनकी अपनी असामान्य निर्मिती-क्षमता तथा सौन्दर्य विषयक दृष्टिकोण के कारण उ. नत्थु खाँ साहब जो रचनाएँ करते थे, वह दिल्ली की

असली रचनाएँ ही प्रतीत होती थी । उनके द्वारा की गई रचनाओ का विस्तार पूरी तरह में घरानेदार और कलात्मक हुआ करता था । उ. हबिबुद्दीन खाँ साहब उ. नत्थु खाँ के बारे में कहते थे की, 'हमारे उ. नत्थु खाँ जब तबला बजाते थे तब वे सोने की स्याही से तबला लिखते थे ।' इस विधान का अर्थ यह है की उस्ताद जो बजाते थे वह अन्य वादको के लिये अनुकरणीय आचरण का पाठ ही बनता था । उ. नत्थु खाँ का तबला अत्यंत तैयारी के साथ नहीं बजाते थे । उनका तबला बहुतांश मध्यलय में ही बजता था । उनकी विशेषता थी – दाँये बाँये का वजन, हाथ का निकास और विस्तार क्रिया अदभूत थी ।'' [१]

५:१:२ उ. ईनाम अली खाँ :

''उ. ईनाम अली खाँ दिल्ली घराने के विद्वान एवं ज्येष्ठ तबलावादक उ. गामे खाँ के सुपुत्र थे । उ. गामे खाँ के हाथ को चोट पहुँतने के कारण कई वर्षो से वे तबलावादन नहीं करते थे परंतु वे अत्यंत प्रतिभावान रचनाकार तथा गुरु थे । दिल्ली घराने की संपूर्ण तालीम उ. इनाम अली खां को उनके पिता से प्राप्त हुई थी । उ. इनाम अली भी खुद एक प्रतिभावान कलाकार होने से उनका तबलावादन घराने के अनुशासन सहित नवनिर्मित साहित्य से युक्त रहता था । दिल्ली घराने के २०वीं शती के एक श्रेष्ठ तबलावादक उ. नत्थू खाँ, इनाम अली के मामा थे और नत्थू खाँ साहब के तबले की विशेषतः उनके वादन विचारों की छाप भी उनके तबले पर अंकित हुई प्रतीत होती थी ।

उ. ईनाम अली अपने वादन में कभी कभी पूरब अंग की गतें भी बजाया करते थे और उन गतों को वे अत्यंत फुर्ती से प्रस्तुत करते थे । ऐसी गतें पस्तुत करने का उनका उद्देश्य यही दिखाना था कि पूरब शैली का तबला भी वे अच्छी तरह से बजा सकते हैं, किन्तु उनका मन पूर्णतः रत था दिल्ली के 'पेशकार' एवं 'कायदे' की रचनाओं एवं उनके विविधांगी विस्तार क्रियाओं में । एक बार उनसे प्रश्न किया गया कि वे गत–टुकडों का तबला एवं अन्य तालों में सोलोवादन क्यों करते, तब इसपर उनके विचार इस प्रसार थे :

(१) त्रिताल के 'पेशकार' एवं 'कायदे' के विशाल सौंदर्यमय फूलों–फूलों के बगीचे में उनका मन इतना रम जाता था किं उसमें से बाहर निकलने के लिए उनके पास समय नहीं था और उसमें उन्हे विशेष आनंद भी नहीं मिलता था ।

(२) त्रिताल पूर्णतः समबद्ध आकार का, चतस्र जाति का काल है तथा वह तालों का बादशाह है । त्रिताल में जैसी सुंदर एवं परिपूर्ण रचनाएँ बन गई है और नवीन रचनाएँ भी बाँधी जा सकती हैं, वैसी वादन प्रकारों की निर्मिति अन्य तालों में नहीं की जा सकती ।

इनके प्रमुख शिष्यों में उ. फैयाज खाँ एवं उस्ताद लतीब अहमद ने विश्वव्यापी लोकप्रियनी अर्जित की हैं । इनके अतिरिक्त इनको शिष्य श्री सुधीर माईणकर (मुंम्बई) एवं इनके पुत्र श्री गुलाम हैदर दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में कार्यरत हैं । दिल्ली घराने के इस प्रतिष्ठित तबला वादक का निधन २१ जनवरी १९८८ को मुम्बई में हुआ ।'' [२]

५:१:३ उ. शफात अहमद खाँ

''आधुनिक समय के बहुचर्चित एवं दिल्ली घराने के प्रमुख तबला वादकों में शफात अहमद खाँ का नाम चांदी के कलाकारो में आता हैं । उस्ताद चाँद खाँ साहब के नाती अहमद का जन्म मई १९५४ में दिल्ली में हुआ था । उन्होंने तबला बजाने की शिक्षा दिल्ली घराने के प्रसिद्ध तबला वादक अपने पिता उस्ताद छम्मा खाँ से प्राप्त की जो संगीत एवं कला संकाय दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यरत थे ।

१७ वर्ष की आयु में अपना पहला कार्यक्रम देने के पश्चात उन्हें अनेक कार्यक्रमो में बजने के अवसर प्राप्त हुए । आज शायद ही कोई ऐसा संगीत सम्मेलन होगा जहाँ प्रसिद्ध कलाकारो के साथ शफात अहमद खाँ ने अपने तबले सें संगति ने की हो । अनेक कार्यक्रमो के सम्मुख उन्हें बजाने का अवसर प्राप्त हुआ । भारत में ही नहीं बल्कि समय–समय पर रुस, युरोप, अमेरिका में जहाँ–जहाँ व गये, अपने तबला वादन से सबको मंत्रमुग्ध करते रहे हैं । ई नाम आई और एल.पी. डिस्क CD व DVD द्वारा उनके

तबला वादन को देश–विदेश में सूना जा सकता हैं ।

कर्नाटक अवनद्ध कलाकारों के साथ मैत्री जुगलबंदी व सन १९८६ के सांस्कृतिक अवार्ड उनके तबला वादन की प्रसंगीत के लिए प्रशंसनीय कार्य हैं । आपके सांगीतिक योगदान को देखते हुए संस्कृति अवार्ड (१९८६) एवं भारत सरकार ने पद्मश्री अवार्ड (२००३) से सम्मानित किया हैं । संगीत में गायन, वादन एवं नृत्य की तीनों विधाओं में शफात अहमद को संगीत की महारत हासिल थी अपने जीवन काल में सर्वाधिक व्यस्त कलाकार उ. शफात अहमद खाँ ने पश्चात्म एवं फयूजन संगीत में भी बखूबी तबला वादन किया ।

पं. शिवकुमार शर्मा एवं पं. हरिप्रसाद चौरसियां के सर्वाधिक प्रिय तबला वादक शफात अहमद ने देश के लगभग चोटी के कलाकारो के साथ संगत किया हैं, जिनमें प्रमुख हैं : पं. भीमसेन जोशी, पं. जसराज, पं. राजन साजन मिश्रा, पं. रविशंकर, पं. बुद्धिदित्य मुखर्जी, उ. अहमद अली खाँ, उ. शाहिद परवेज, पं. उमाशंकर मिश्रा, पं. देबु चौधरी एवं बिरजू महाराज इत्यादि । आपके शिष्यों में गुलशन कुमार, अमित सचदेवा, अकबर लतीफ एवं दीपक मेहता इत्यादि प्रमुख हैं । उनकी मृत्यु २४ जुलाई २००५ को दिल्ली में हुई ।'' [३]

५:१:४ उ. जनाब गुलाम हैदर

''वर्तमान समय में दिल्ली घराने के वंशालगत कलाकार जनान गुलाम हैदर खाँ का नाम 'खलीफा' तबला वादकों में लिया जाता हैं । २९ मार्च १९५५ में जनाब हैदर का जन्म दिल्ली घराने के प्रतिष्ठित परिवार में हुआ । तबला वादन की कला आपकों विरासत में मिली । आपके बालिद उस्ताद ईनाम अली दिल्ली घराने के खलीफा कलाकार थे और उन्ही सें जनाब गुलाम हैदर खाँ ने तबला वादन की उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त की । आपने अपने छोटे दादा उत्साद मुन्क खाँ से भी दिल्ली घराने की बारीकयों को ग्रहण किया ।

सुरासंगार संसद (मुंबई) द्वारा 'तालमणि' की उपादि से विभूषित बनाव गुलाम हैदर खाँ ने देश के उनेक संगीत सम्मेलनो में संगत ९ एकल तबलावादन के प्रशंसनीय प्रस्तूति दी हैं । आपने अनेक नामचीन कलाकारों के साथ संगत किया हैं । जिनमें प्रमुख हैं – उस्ताद ईमरत्तखाँ, पंडित खूनेना हजारी लाल, उत्साद गुलाम मुस्तफा खाँ, यं. मणिलाल नाम, उस्ताद नसीर अहमद इत्यादि ।

वर्तमान समय में आप दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत विभाम में तबलावादक के पद पर कार्यरत हैं । जनाब गुलाब हैदर खाँ अनेक शिष्यों को तबलावादन की शिक्षा दे रहे हैं जिनमें उनके दो पुत्र शाहिद हैदर, सादिक हैदर एवं अकबर नितीफ प्रमुख हैं । उत्साद हिदायत खाँ ने अनेक नामचीन कलाकारों के साथ संगत किया हैं जिनमें प्रमूख हैं उत्साद अमीर खाँ, उत्साद विलायत खाँ, उ.अली अकबर खाँ, उ.गुलाम मुस्तफा खाँ, पं. अरविन्द पारिख इत्यादि । आपने अनेक शिष्यों को उदार भाव से शिक्षा दी हैं जिनमे प्रमुख है दिल्ली घराने के यशस्वी तबला वादक उ. फैय्याज खाँ (दिल्ली), लतीफ खाँ (मुंबई) एवं आपके दो पुत्र हैं हनीफ खाँ एवं जफर खाँ जो आपको परम्परां को आगे बढ़ा रहे हैं । अन्तिम अवस्था में आप जयपुर में ही रहे और यहीं २३ अगस्त २०१३ को पैगम्बरवासी हुए ।'' ४

५:१:५ उ. बोली बख्श खाँ

''दिल्ली घराने के उत्कृष्ट प्रतिनिधि कलाकार उस्ताद बोलो बोली बख्श खा ने अपने समय में बडी यश और ख्याति सर्जित किया और 'खलीफा' के सम्मानजनक उपाधि से सम्बोधित किए गये । अनुमानतः आपका जन्म १९५० ई. के लगभग में हुआ होगा । आप दिल्ली घराने के सुप्रसिध्ध कलाकार बड़े काले खाँ के पुत्र थे । आपको तबला वादन की शिक्षा अपने पिता से ही प्राप्त हुई । उ. बोली बख्श खाँ अपने सोलों वादन में दिल्ली अंग से पेशकार, कायदा व रेला बजाते थे । बोलो बख्श के पुत्र उ. नत्थू

खाँ अपने समय के श्रेष्ठ कलाकार हुए और वे अपने पिता के विषयम में कहा करते थे कि दिल्ली घराने में उन जैसा कलाकार नहीं ही हुआ ।

बोलो बख्श खाँ एक उत्कृष्ट रचनाकार भी थे । अधिकतर उनकी रचनाएँ क्लिष्ट हुआ करती थी, जो काफी अभ्यास के बाद ही बज पाती थी । उ. बोली बख्श विद्यादान में सदा उदार रहें । पुत्र नत्थु खाँ के अलावा उनके शिष्यों में सर्वाधिक प्रसिद्ध कलाकार मुनीर खाँ हुए, जिन्होंने अपने उस्ताद का नाम रोशन किया । इसके अलावा आपके शिष्यों में फिरोजशाह दिल्ली वाले, बाबा साहेब, भोलानाथ एवं अलादीया खाँ आदि प्रमुख हैं।'' [५]

५ः१ः६ उ. गामी खाँ

''मियां काले बख्र्श उर्फ उ. छोटे काले खाँ के सुपुत्र गुलाम हुसैन खाँ उर्फ गामी खाँ का नाम दिल्ली घराने के सर्वश्रेष्ठ तबला वादकों में लिया जाता हैं । उ. गामी खाँ अपने समय में घराने का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि होने के कारण 'खलीफा' के उपाधि से सम्मानित किए गए । आपका जन्म सम्भवतः १८८३ ई. में दिल्ली में हुआ था । उन्होंने ५ वर्ष की आयु से ही अपने पिता से तबला वादन की शिक्षा लेने आरम्भ कर दी थी । परन्तु जब वे पन्द्रह वर्ष के थे कि पिता का छत्र छाया उठ गया । इसके बाद युवा गामी खाँ ने अपने आप को ३०–३६ वर्ष की अवस्था में ही कलाकारों की प्रथम पंकित में लाकर खड़ा कर दिया । एक लम्बे समय तक एकल वादन व संगति के लिए आकर्षण का केन्द्र बने रहे । उ. गामी खाँ ने कई ख्याति प्राप्त कलाकारो के साथ भी संगत किया जिनमे प्रमुख नाम हैं ः विलायत हुसैन खाँ, मुशताक हुसैन खाँ, उमराव खाँ एवं नसरुद्दीन डागर इत्यादि । वे प्रतिभावान रचनाकार भी थे ।

उ. गामी खाँ अधिकतक बम्बई में रहते थे । वही पर इन्होने अनेक शिष्यों को तबलावादन की शिक्षा दी । उनके पुत्र इनाम अली एवं छोटे भाई भून्नु खाँ ने दिल्ली 'बाज' बजाने में बहुत प्रसिद्धि पाई । मोहम्मद अहमद फकीर मोहम्मद 'पीस खाँ'

रिजराम देसाई, मारुति कीर, इकबाल हुसैन, राम ध्रुवै, हिदाम खाँ, लतीफ खाँ, एंथोनी दास आदि उनके शिष्य थे । जून १९५७ में वे अपने सम्बंधी से मिलने लाहौर (पाकिस्तान) गये थे । वहीं पर १९५७ में वे पैग्म्बरवासी हुए ।'' [६]

५:१:७ पं. सुभाष निर्वाण

''दिल्ली के संगीतमय वातावरण में पते यशस्वी तबला वादक पंडित सुभाष निर्वाण का जन्म १९५३ में हुआ । अपने तबला–वादक की प्रारंभ्भिक शिक्षा अपने पिताश्री मोतीलाल निर्वाण एवं चाचा जी श्री चमनलाल से ७ वर्ष की आयु से लेनी आरम्भ की । तदुपरान्त आपने अपने पितामह यं गोपालदास निर्वाण से भी तबले की बारीकियों को ग्रहण किया । दिल्ली घराने के वादन एवं निकास के अनुसार कायदा एवं रेला आदि तैयारी एवं सफाई से पेश करना सुभाष निर्वाण की विशेषता थी । गायन, वादन एवं नृत्य तीनों विधाओं के संगति में महारत प्राप्त पं. सुभाष निर्वाण ने हर क्षेत्र के शीर्यस्थ कलाकारे के साथ संगीत की है । भारत के लगभग सभी प्रतिष्ठित संगीत समारोहों व आकाशवाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रमों में प्रस्तुति दे चुके पंडित सुभाष निर्वाण यूरोपियन जाज संगीत के साथ भी सफल संगति कर चुके हैं । चार बार इगलेण्ड के सांस्कृतिक समारोह में भी वह वादन कर चुके हैं । इसके अतिरिक्त विदेशो में आपने सोवियत संघ, जापान, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, पश्चिम जर्मनी और अनेक अफ्रीकी देशो में वह शिरकत कर चुके हैं । आपने जिन सुप्रसिध्ध कलाकारों के साथ संगत किया हैं । उनमें कुछ प्रमुख नाम हैं – गायन में पं. जसराज, विदुषी गिरिजा देवी, विदुषी शोभा गुट्रे, डॉ. बाल मुरली कृष्णन इत्यादि । वाद्य में पं. रविशंकर, पं. वी.जी. जोग, पं. रामनारायण, डॉ. एन. राजम, पं. बुध्धदेव दास गुप्ता, उ. अमजद अली खाँ इत्यादि ।

नृत्य में विदुषी सितारा देवी, पं. बिरजु महाराज, पं. दुर्गाताला विदुषी उमा शर्मा इत्यादि । लाल वाद्य कार्यहरी में आपने विद्वान टी.वी.एस गोपाल कृष्णन एवं विद्वान

उमपालपूरम बी.के. शिदारमन के साथ भी तबला वादन किया है । सुभाष जी को उच्छे–उच्छे शेरो शायरी उनके जूबान पर रहेते थे ।

हसमुख एवं विनम्र स्वभाव के धनी पं. सुभाष जीने कई शिष्यों को प्रशिक्षित किया है, जिनमें आपके सुपुत्र सुरज निर्वाण एवं हरिमोहन शर्मा प्रमुख हैं । ये सुभाष जीने दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत संकाम में तबला वादक के पद पर कार्य किया और वही से २०१३ में सेवा निवृत्त हुए । अंतिम क्षणों मेंकैंसर हो जाने के कारण ३ अप्रेल २०१४ को ताल का यह अनन्य साधक नादबल में लीन हो गया ।'' [७]

५:१:८ पं. सुधीर माईणकर

''पं. सुधीर जी का जन्म मुम्बई के एक संगीत प्रेमी परिवार में १६ मई सन् १९२८ को हुआ । आपने तबले की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता श्री विष्णुजी माईणकर सें प्राप्त की । इसके बाद आप ८ वर्षो तक दिल्ली घराने के सुविख्यात इनाम अलीखाँ से विधिवत शिक्षा प्राप्त की । तत्पश्चात आप बड़ौदा आये और आप वहाँ के मूर्घन्य प्रोफेसर सुधीरकुमार सक्सेना के सम्पर्क में आये और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त किया । आपने मुंबई के मारुति कीर तथा श्री एम बी भिड़े से भी शिक्षा प्राप्त की ।

पं सुधीर माईणकर ने बहु उपयोगी कई पुस्तकें लिखकर के तबला प्रेमियों को अमूल्य उपहार दिया हैं । आपकी पुस्तक 'तबला वादन, कला और शास्त्र' पर आपकों हिन्दी साहित्य अकादमीने आपकों सम्मानित किया हैं । केन्द्र सरकार ने सन् २००४ में अभ्यास प्रवृत्ति प्रदान कर गोरवान्वित किया हैं । सन् २००६ में संगीत रिसर्च अकादमी कोलकत्ता में भी आपको सम्मान किया ।

वर्तमान में आप जीवन बीमा निगम से सेवा मुक्त होकर बम्बई में रह रहे हैं और अपने शिष्यों को तबला वादन की शिक्षा दे रहे हैं । आपके मुख्य शिष्यों में सर्वश्री उमेश मोघे, प्रवीण करकरे, सचिन कदम तथा वैष्णव आदि हैं ।'' [८]

५ः१ः९ पं. प्रेम वल्लभ

''श्री प्रेम वल्लभ का जन्म २० जनवरी सन् १९१८ को मथुरा में हुआ । आप देश के ऐसे कलाकार थे, जिनको तबला एवं पखावज दोनों वाद्यों पर समान अधिकार था । श्री प्रेम वल्लभ मथुरा के मूल निवासी थे, परन्तु आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र में सेवारत होने के कारण उनका कार्यक्षेत्र दिल्ली ही रहा । आपने उ. अहमद जान थिरकवा से भी मार्गदर्शन लिया । आप तबला वादक स्व. श्री चतुरलाल के समकालीन थे । प्रेम वल्लभजीने पचास से साठ के दशक में आकाशवाणी के माध्यम से देशव्यापी ख्याति अर्जित थी । न जाने कितने राष्ट्रीय कार्यक्रमों में आपने देश के अगणित कलाकारों की संगत की । श्री प्रेम वल्लभ जी ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की और से अनेक बार विदेशो की यात्रा की ।

श्री प्रेम वल्लभ अत्यन्त विनम्र, मृदु–भाषी और सहयोगी प्रवृत्ति के कलाकार थे । अतः वे अन्य कालाकारों में काफी लोकप्रिय थे । श्री प्रेम वल्लभ जी का शरीरांत दिल्ली में सत्तर के दशक में हुआ ।'' [९]

५ः१ः१० श्री प्रविण करकरे

''आपका जन्म १६ मार्च, १९७१ में संगीत प्रेमी कुटुंब में हुआ । आपने तबले की प्रारंभिक शिक्षा पं. सदाशिव पवारजी ली, जो लखनौ–फरुखाबाद घराने के थे । वर्तमान में आप ५ साल व सुधीर माईणकर जी से तबले की तालीम ले रहे है । आप वाणिज्य विषय में स्नातक है । परंतु बाद में आपने अपना पूर्ण लक्ष्य एक अच्छे कलाकार होने के लिए केन्द्रीत किया । सन् २००१ में आपने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से अनुस्नातक को पदवी प्रथम क्रमांक से हासिल की । बाद में, गांधर्व महाविद्यालय, मुंबई से विशेष योग्यकता के साथ 'अलंकार' की पदवी २००६ में हांसिल की ।

आपको सन् १९९४ में सुर सिंगार समसद की ओर से मुंबई में तालमणि की उपाधि प्राप्त की । आपको गांधर्व महाविद्यालय, मिरज से त्रिबंक जोशी पुरस्कार सन् १९९८ में प्राप्त हुआ । आपने भारत के अनेक शहरो में अपना स्वतंत्र वादन प्रस्तुत किया हैं । अहमदाबाद की सप्तक संस्था में घराना सम्मेलन में अजराड़ा घराना पर अपना व्याख्यान दिया था ।

आप आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के मान्य प्राप्त कलाकार है । आपने साथ–संगत अनेक दिग्गजों के साथ की हैं । आप २५ साल से तबले की शिक्षा, ज्ञानवर्धन के रुप में दे रहे हैं । आप शारदा संगीत विद्यालय, मुंबई में प्रशिक्षक के रूप में, कार्यरत है । आपकी २०१५ में सन् १९९२ से शारदा संगीत विद्यालय की और से 'शारदा विभूषण' महान कलाकार ऊ. झाकीर हुसैन द्वारा प्राप्त हुआ ।

आप मुंबई युनिवर्सिटी में विजिटींग फेकल्टी रुप में कार्यरत हैं । तथा गांधर्व महाविद्यालय, मुंबई, पुणे विश्वविद्यालय तथा म.स. विश्वविद्यालय, बडौदा में परीक्षक के रुप में सेवा दे रहे हैं । आपने अनेक सेमिनार मे भाग लिया है तथा अपने विषय पर व्याख्यान दिया हैं ।'' [१०]

५:१:११ पं. उमेश मोघे

''आपका जन्म ४ डिसेम्बर, १९६७ में मुंबई में हुआ । आपका तबले का प्राथमिक शिक्षण श्री मल्हारराव कुलकर्णी जी के पास हुआ । बाद में आपने तबले का विधिवत शिक्षण उ. इनाम अली खाँ साहब के गंडाबंध शिष्य पं. सुधीर माईनकर जी से शुरु किया, जो आज भी कायम हैं ।

आप तबले के तत्वचिंतक एवं ऊत्तम रचनाकार और वादक है । आपने दिल्ली घराने को विस्तारक्रिया एवं महत्व के बारे में गहन चिंतन क्रिया है, और आज भी कर रहे हैं । दिल्ली घराने की पर आपका विशेष प्रभुत्व हैं । दिल्ली घराने का सखोल अभ्यास

की तालीम आपने ऊ. नगरखाँ श्री रमेश ओझा, और श्री रामदास भरटे श्री के पास ली है । वर्तमान में आप १९ साल से पुणे विद्यापीठ में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं । आपको केन्द्र सरकार की और से 'सिनियर फेलोशिप' भी प्राप्त हैं । आपने संगीत नाटक अकदामी दिल्ली में तबला महोत्सव कार्यक्रम अंतर्गत अपना स्वतंत्रवादन प्रस्तुत किया है । आपने NCPA, मुंबई के सेमिनार में तबला विषय में व्याख्यान दिया हैं । आप छात्रों के ज्ञानवर्धन हेतु, अनेक कार्यशाला भी लेते है । पं.सुरेश तलवलकर जी की आवर्तन किताब का आपने अनुवाद किया हैं ।'' [११]

५:२ फरुखाबाद घराने के कलाकारों का योगदान

५:२:१ उ. हाजी विलायत अली खाँ

''उ. हाजी विलायत अली के पास गुणों का अनुठा मिश्रण था । वह एक सर्वोच्च तबला वादक थे । वह एक बेहतरीन संगीतकार और एक सफल शिक्षक थे । उन्होंने दिल्ली की संरचना को संयुक्त किया और तबले को एक नए रूप में प्रस्तुत किया । उनके पुत्र हुसैन अली एक प्रसिद्ध कलाकार बने । उनके कुछ प्रतिष्ठित शिष्यों में चुडियावाले इमाम बख्श, मियाँ सलारी खाँ, मुबारक अली खाँ और छन्नू खाँ का सम्मान किया जाता हैं ।

उ. अमान अलीखान हाजी के दूसरे पुत्र थे । वह अपनी कला में समझदार थे । प्रो लालजी श्रीवास्तव ने अपने गुरु से सुना था कि उनके बुढ़ापे में अमन अली खान का सामना कुछ संक्रामक बिमारी सें हुआ था । उस समय उनके परिवार के सदस्यों ने उन्हें उपेक्षित किया । उस पर वह जयपुर के लिए निकल गए और अपने परिवार के बजाय दूसरों को शिक्षित करने का फैसला किया । पं. जियालाल ने इस अवसर को हात से जाने नहीं दिया । उन्होंने उस्ताद की बहुत देखबाल की और उस्ताद ने भी उन्हें प्रशिक्षित किया ।

उ. हाजी की रचनाओं को सभी तबला वादक को धार्मिक रूप सें सिखाया जाता हैं । उ. अमीर हुसेन खाँ का दावा हैं कि यदि कोई भी कलाकार द्वारा हाजी जी की एक रचना प्रस्तुत की जाती है तो उसे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन मान सकते हैं ।'' [१२]

५:२:२ उ. मुनीर खाँ

''उ. मुनीर खाँ (तबला–वादक) आपका जन्म पारम्परिक संगीतज्ञों के एक परीवार में मेरठ जनपद के ललियाना नामक गांव में सन् १८६२ में हुआ । आपके पिता का नाम काले खाँ था । जो अधिकतर मुंबई में रहा करते थे । मुनीर खाँ के उस्तादों के सूची में चौबीस गुणियों के नाम हैं । उनके गुण–ग्राहिता का विवरण कुछ इस प्रकार है – फरुखाबाद घराने के उ. हाजी विलायत अली खाँ के पुत्र उ. हुसैन अली से पन्द्रह वर्षो तक शिक्षा ली, फिर दिल्ली घराने के उ. नत्थु खाँ के पिता खलीफा बोली बख्श से गंडा बंधाकर दस–बारह वर्षो तक शिक्षा ली (इस प्रकार वे नत्थु खाँ के गुरु भाई भी हो गये । उ. नासिर खाँ परवावजी और उ. नजर अली खाँ से पारम्परिक रीति से गंडा बंधाकर तालीम ली । उ. मुनीर खाँ साहब ने खूब देशाटन किया और जहाँ कुछ अच्छा मिला निःसंकोच ग्रहण करते गये ।

उ. मुनीर खाँ के जीवन का अधिक समय मुंबई और हैदराबाद में बीता, परन्तु अपने जीवन के संध्याकाल में उस समय के महान संरक्षक रायगढ़ (म.प्र.) के राजा चक्रधरसिंह के दरबार में सभासद हो गये । आपके एक मात्र पुत्र का नाम हिदायत खाँ था, जो युवावस्था में ही चल बसे । उ. मुनीर खाँ एक अच्छे प्रदर्शक के साथ–साथ एक ऐतिहासिक शिक्षक के रूप में अमर हो गये । आपके शिष्यों का एक बड़ा परिवार हैं । उसमें से कुछ ख्याति प्राप्त कलाकारों के नाम हैं – सर्वश्री उ. अमीर हुसेन खाँ (भांजे) गुलाम हुसेन खाँ (भतीजा) उ. अहमद जान थिरकवाँ, उ. हबीबुद्दीन खाँ, उ. नजीर खाँ पानीपतवाले, प्रह्लाद मेहेर, सादिक हुसैन खाँ, मुश्ताक हुसेन खाँ, शमशुद्दीन खाँ, बाबा

लाल इस्लामपूरकर, विलायत हुसेन खाँ, निसार हुसैन खाँ, डॉ. फैजजंग बहादुर (हैदराबाद) अयुबमिंया, औलाद हुसैन (खैरागढ), अब्दुल रहीम मियाँ (बरहानपुर) विष्णुजी शिरोड़कर, सुब्दा राव (गोवा) आदि । एक सार्थक रचनाकार और अपूर्व उदार शिक्षक उ. मुनीर खाँ तबला के मुंबई घराने के संस्थापक माने जाते हैं । वे अपने भोजे एवं शिष्य उ. अमीर हुसैन को अपना उत्तराधिकारी और खलोफा मानते थे । ११, सितम्बर सन् १९३८ ई को उ. मुनीर खाँ रायगढ़ में पैग्म्बरवासी हो गये ।'' [१३]

५:२:३ उ. निजामुद्दीन खाँ

''कोई भी शिष्य अपने समर्थ गुरु के मार्गदर्शन के अनुसार रियाज करता हैं । गुरु से आदर्श निकास का तंत्र समझकर शिष्य जब उसके अनुसार शब्दाक्षरों को बजाता हैं और उस पर रियाज करता है, तब संभवतः ऐसा शिष्य अच्छा वादक बन ही जाता हैं । लेकिन विशेषतः तबले के विषय में मुझे लगता हैं कि इस प्रकार सें छात्र की प्रगति तथा विकास केवल एक ही दिशा में हुआ होता हैं । ऐसे वादकों में एकाध वादक को ऐसा लगता हैं, कि अन्य ज्येष्ठ–श्रेष्ठ तबला वादकों के पास जिस प्रकार का ज्ञान तथा वादन कौशल हैं, उनका भी परिचय तथा शिक्षा वह प्राप्त करे औंर इस उद्देश्य से वह अन्य गुरुजनों के पास जाता हैं और सीखना हैं । उ. मुनीर खाँ ने चोबीस गुरुजनों के पास से ज्ञान प्राप्त किया था । मुनीर खाँ जैसे समर्थ गुरु के पास सीखने वाले उ. थिरकवा खाँ, उ. अमीर हुसेन खाँ जैसे शिष्यों को अपने एकही गुरु के पास से ज्ञान लेने से मुनीर खाँ साहब के विविध गुरुजनों के ज्ञान का खजाना अनापास प्राप्त हुआ । फलतः ये दो कलाकार चौमुखी वादक बन गए थे ।

उ. निजामुद्दीन खाँ के विद्याग्रहण के बाबत ऐसा ही कुछ हुआ था । उ. निजामुद्दीन खाँ ने अपनी तबले की विद्या अपने पिता तथा गुरु 'उ. अजीम बक्ष जावरेवाले' इनसे प्राप्त की थी । उस जमाने के असामान्य कलाकार उ. अजीम बक्ष जी

ने उनकी विद्या प्रमुखतः दो गुरुजनों से प्राप्त की थी । दिल्ली घराने के उ. इलाही बक्ष के पास अजेज बक्षने दिल्ली की तालीम हासिल की थी और बाद में लखनौ घराने के खलिफा उ. आबिद हुसेन से लखनौ घराने की विद्या प्राप्त की थी । इसकी वजह से अजीम बक्ष दिल्ली तथा लखनौ घराने का तबला खूबसुरती से तथा प्रभावकारकता से पेश करते थे । यही दिल्ली तथा लखनौ घराने की विरासत अपने पिता–गुरु से उ. निजामुद्दीन खाँ को प्राप्त हुई ।

ज्ञान के अलावा अच्छा शिष्य अपने गुरु से जो हासिल करता हैं, वह होती हैं नजर । यह नजर केवल तालीम से प्राप्त नहीं हो सकती । गुरु से शिष्य को दी जाती हैं, वह हैं विद्या तथा तालीम, लेकिन उसे सुंदरता की नजर कब प्राप्त होगी इस बारे में कहना मुश्किल हैं । उ. निजामुद्दीन खाँ साहब ने अपने रसिक तथा सौंदर्यपूजक स्वभाव के कारण एक उच्चस्तरीय नजर प्राप्त की थी और इसी कारण उनका हर प्रकार का तबला वादन खूबसुरत बन जाता था । उ. निजामुद्दीन खाँ प्रथम सौंदर्यपूजक थे और बाद में तबले के कलाकार । उनका दाँये–बाँये का संतुलन लाजवाब था । कभी वो नजाकत भरा होता था, तो कभी वो शक्तिमान होता । लेकिन वह हंमेशा खूबसुरत होता था ।

अपने वादन के पूर्वांग में, अलग अलग प्रकार के मोहरे मुखदे वे कलापूर्णता सें बजाते थे । इनमें कभी जाति बदल होता था तो कभी तिहाई के रूपों में वे अलग अलग बदल किया करते थे । उनके वादन में एक चमत्कृतिपूर्ण उपज अंग की भी प्रस्तुति होती थी ।

शास्त्रीय गायन, वाद्य वादन तथा नृत्य के साथ भी वे उचित ढंग से करते थे । उपशास्त्रीय संगीत, विशेषतः गजल, ठुमरी, दादरा में उनकी साथ–संगत यह रसिक श्रोताओं के लिए एक आनंददायक थी । पंडित शोभा गुर्टु के जैसे असंख्य उपशास्त्रीय गायक–गायिकाओं के साथ उन्होंने संगत की है । अपने वादन में 'धातींनाडा' के लग्गी के लिए आप अत्यंत लोकप्रिय थे ।'' [१४]

५:२:४ पं. अनिन्दो चटर्जी

''फरुखाबाद घराने के खलीफा उ. मसीद खाँ के शिष्य ज्ञानप्रकाश घोष एक बहुत ज्ञानी और समर्थ तबला–वादक थे । बंगाळ में तबला वादन के प्रचार का बहुत बड़ा कार्य उन्होंने किया । उनके अनेक शिष्यों में से एक है ये अनिन्दों चटर्जी । पं. ज्ञानप्रकाश जी के कारण फरुखाबाद घराने का अच्छा खजाना अनिन्दों चटर्जी को प्राप्त हुआ ।

पं. ज्ञानप्रकाश जी के पास जाने से पहले पं. अनिन्दो जी ने तबले की शिक्षा अपने चाचा पं. विश्वनाथ चटर्जी से प्राप्त की हैं । फरुखाबाद और लखनों का तबला अच्छी तरह से सीखाने के लिए उन्होंने लखनौ के खलिफा उ. आफाक हुसेन से भी विद्या ग्रहण की हैं । दाँये–बाँये के असली कलात्मक निकास के कारण उनका तबला–वादन अत्यंत उच्चस्तरीय एवं श्रवणमधुर होता है । सोलो और साथ–संगत दोनों क्षेत्रो में वे प्रविण और लोकप्रिय हैं । उनकी रियाज के पद्धति अलग प्रकार की हैं । सिर्फ ऊँगलियों और हाथों सेही वे तबला बजाते हैं, बाकी शरीर की हलचल बहुत कम होती हैं । इसलिए उनका तबला श्रवणीय होने के साथ–साथ प्रेक्षणीय में होता हैं । त्रिताल में तो उनका सोला वादन उच्च स्तर का होता ही हैं, मगर अनेक अन्य तालों में भी वे सक्षमता से सोलो वादन करते हैं । भारत सरकार की ओर सें आपको पद्मश्री की उपाधि प्राप्त है । इसके अलावा आपको देश–विदेशो में अनेक सम्मान प्राप्त है ।'' [१५]

५:२:५ पं. सुरेश तलवलकर

''पं. सुरेश तलवकरजी की तबले की शिक्षा पं. पंढरीनाथ नागेशकर जी के पास संपन्न हुई और उन्हीं के द्वारा उ. अमीर हुसैन खाँ साहब की पूरब–फरुखाबाद शैली का तबला उन्हें प्राप्त हुआ ।

सोलो वादन की शिक्षा के दौरान, उन्हें लयकारी में विशेष रस होने से उन्होंने कर्नाटकी संगीत के रामनाड़ ईखरन् नामक लयप्रभु मृंदग–वादक से लयकारी और उसकी

प्रस्तुति की विशेष शिक्षा ग्रहण की । फलतः उनके वादन में लय पर के उनके प्रभुत्व की श्रोताओं को निरंतर प्रचिति हुआ करती हैं । रसिक एवं मर्मग्राही वृत्ति के तलवलकर जी ने तबले के सभी घरानों की खास रचनाओं का विशेष अध्यपन किया और उसके जरिए उन्होंने अपनी स्वयं की एक अलग शैली निर्माण की हैं । दिल्ली वादन शैली का और इस घराने के विचारसूत्रों का अध्यपन करके उन्होंने उन सूत्रों का अच्छी तरह आत्मसात् किया हैं । उनकी निर्माण की हुई वादन–शैली की विशेषताएँ निम्ननुसार हैं :–

१) कुछ सालों से उनका सोलो वादन बहुतांश में त्रिताल, रुपक, झपताल, धमार तालों में होता हैं ।

२) इन अन्य तालों में खानदानी पारंपारिक रचनाएं उपलब्ध न होने से, शायद, उनके द्वारा बनी हुई रचनाएँ एवं 'कायदे' स्वरचित होते हैं।

३) उनके इस पूर्वांगप्रधान तबले पर दिल्ली बाज की छाप महेसूस होती हैं ।

४) गत–टूकडों का उत्तरंग तबला पूरब बाज का होता हैं, किन्तु उस पर पखावज की छाप श्रोताओं को महसूस होती हैं ।

५) उनके वादन में विविध आकार के और विभिन्न विश्रांति कालों के चक्रदार, टुकडे और तिहाई के अंतर्भाव होता हैं ।

६) सोलो वादन में सांगीतिक्ता की अधिक प्रचिति हो, इस उद्देश्य से वे सोलों वादन लेहरे की मदद से न करके गायन की बंदिशों की सहायता सें करते हैं ।

७) पं. तलवलकर जी ने युवावस्था से लेकर ग्वालियर, आग्रा एवं जयपुर घराने के महाराष्ट्र के अत्यंत ज्येष्ठ और महान गायको की साथ–संगत करने का मौका कभी नहीं गँवाया । पं. निवृत्तिबुवा सरनाईक, पं. गजाननराव जोशी, पं. राम मराठे, पं. यशवंतबुवा जोशी, पं. शरदचंद्र आरोलकर, उ. खादिम हुसेन और वर्तमान पीढ़ी के पं. उल्हास कशालकर आदि कलाकारों की साथ–संगत अत्यंत सफलता के साथ करने के दौरान उन्होंने अपना स्वयं एक स्थान निर्माण किया हैं । उनकी

साथ–संगत गायक और श्रोता को हंमेशा संतोष प्रदान किया करती हैं ।

८) वाद्य–संगीत की साथ–संगत भी वे उत्कृष्ट रूप में करते हैं ।

९) उन्होंने कत्थक नृत्य की लय एवं उसके गणित का विशेष अध्ययन किया है तथा वे उनेक नृत्यकारों को मार्गदर्शन भी किया करते हैं ।

१०) तबला वादन के प्रस्तुतिकरण के साथ ही तबले के अध्यापन का महत्वपूर्ण कार्य वे अत्यंत सक्षमता के साथ कर रहे हैं । संपूर्ण महाराष्ट्र में सैंकड़ो छात्र उनके पास तबला सीख रहे हैं । जिनमें सें बहुत से विद्यार्थी पूर्ण काल तबले का व्यवसाय करने की लगन सें तबले की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं । यह शिक्षा प्रभावी रूप में हो इस उद्देश्य से वे महाराष्ट्र के गाँव–गाँव में कार्यशालाओं को आयोजित किया करते हैं ।

११) तबले की शिक्षा सैद्धांतिक एवं प्रबोधनात्मक ढंग से हैं । इस दृष्टि से वे प्रयत्नशील हैं तथा संगीत की तबले की वृद्धि के लिए संपन्न होनेवाले विविध सम्मेलनों एवं परिसंवादो के द्वारा वे अपना योगदान दिया करते हैं ।

गुरु–शिष्य परंपरा की शिक्षा वे अपने विद्यार्थियों को देते है जिसके जरिये उन्होंने अनेक उत्तम शिष्य तैयार किये हैं, जिनके नाम है – पं. विजय घाटे, श्री रामदास पळसुले, श्री चारुदत्त फडके तथा उनके सुपुत्र सत्यजित तलवलकर आदि है ।'' [१६]

५ः२ः६ उ. अमीर हुसैन खाँ

''उ. अमीर हुसैन खाँ का जन्म मेरठ जनपद के बनखडा नामक गाँव में सन् १८९९ में अहमद बख्श खाँ के पुत्र के रुप में हुआ । आपके पिता अपने समय के ख्याति प्राप्त सारंगी–वादक थे और आपको हैदराबाद दरबार का राजाश्रय प्राप्त था । बालक अमीर का बाल्यकाल पिता के पास हैदराबाद में ही बीता और तबले की प्रारंभिक शिक्षा भी उन्होंने ही दी । मुंबई के सुप्रसिद्ध कलाविद उ. मुनीर खाँ बालक अमीर के मामा थे

और वे प्रायः हैदराबाद आया करते थे । अपने प्रवास काल में वे अपने भांजे को तालीम भी दिया करने थे । परन्तु उनके मुंबई वापस चले जाने पर यह क्रम टूट जाता था । अतः किशोर अमीर हुसैन ने सन् १९१४ में मुंबई जाने का निश्चय किया, जिससे तालीम के रियाज में रुकावट न आये और फिर मुंबई के ही हो कर रह गये । उ. मुनीर खाँ के तीन प्रमुख शिष्यों में आप भी एक थे । उस्ताद इन तीनों को प्रायः अपने देशाटन में साथ रखने थे और अवसर मिलने पर उन लोगों को बजाने के लिये प्रोत्साहित भी किया करते थे । सन् १९२३ में जब अमीर खाँ साहब चौबीस वर्ष के थे । अपने रायगढ़ में चमत्कारी तबला-वादन करके तत्कालीन कला पारखी नरेश राजा चक्रधर सिंह से आर्शीवाद एवं बडी राशि पुरस्कार में प्राप्त किया था ।

उस्ताद अमीर हुसैन खाँ का कार्यक्षेत्र मुख्यातः मुंबई रहा । वहाँ रह कर खाँ साहब ने सैकड़ों शिष्य तैयार किये और महाराष्ट्र में तबले का खूब प्रचार किया । वे एक अद्भूत रचनाकार और विलक्षण वादक थे । आपकी प्रशंसा में उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ ने कोलकाता की एक महफिल में कहा था कि 'मेरठ ने हिन्दुस्तान को बहुत आला दर्जे के तबलिये दिये, लेकिन अमीर हुसैन जैसा बजायक, बनायक, बतायक और आदमी अभी तक पैदा नहीं किया ।' किसी कलाकार के चतर्मुखी प्रशंसा में इससे अधिक क्या कहा जा सकता हैं । खाँ साहब ने अन्तरमन संगीत जगत में तबला-वादकों और तबला-वादन का उचित सम्मान और मूल्यांकन न किये जाने का एक टीस भरा दर्द था । पहले तो खाँ साहब संगत भी किया करते थे । परन्तु जीवन के उत्तरार्द्ध में केवल सोलो-वादन के कार्यक्रम ही दिया करते थे ।

खाँ साहब हमीर हुसैन एक सहदयी व्यक्ति थे । वे शिक्षा देने में उदार और सदा लय ताल की दुनियाँ में खोयें रहा करते थे । अच्छे-अच्छे शेर-शायरी उनके जुबान पर रहते थे । खाँ साहब को मुस्लिम कलाकारों के कुरैशी जमात का 'चौधरी' होने का सम्मान भी प्राप्त था ।

उस्ताद अमीर हुसैन खाँ के प्रमुख शिष्यों में सर्वश्री अरविन्द मुलगांवकर, पंढरीनाथ नागेशकर, गुलामरसूल, पद्मभूषण निखिल घोष, शरीफ अहमद, धीन मुमताज, बाबा साहब मिरजकर, इकबाल हुसेन, श्रीपद नागेश्कर, पान्डुरंग सोलंकी, आनंद बोडस के अतिरिक्त मुंबई की पारसी महलिा तबला–वादिका डा. आबान मिस्त्री भी थी ।

तबला क्षेत्र का यह सूर्य ५ जनवरी १९६९ को मुंबई में सदा के लिये अस्त हो गया । खाँ साहब द्वारा रचित निम्न 'गत तोड़े' की बंदिश 'तबला' नामक मराठी पुस्तक से साभार दिया जा रहा है, जो ४८ मात्राओं में निबद्ध हैं ।'' [१७]

५ः२ः७ पं. अरविंद मुलगांवकर

''पं. अरविंद विष्णु मुलगांवकर का जन्म १८ नवम्बर सन् १९३८ को हुआ । आपको बचपन सें ही तबला–वादन में रुचि थी, परंतु कला में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए आपने सर्वप्रथम १९५५ में मात्र ६ माह वे लिए उ. बाबालाल इस्लामकर से शिक्षा ली । फिर १९५५ सें ६९ तक फरुखाबाद घराने के महान उस्ताद जनाब अमीर हुसेन खाँ के विधिवत शिष्य बनकर शिक्षा प्राप्त की । आपको १९६९ से तीन वर्षों तक उस्ताद अहमद जान थिरकवा एवं १९७९ सें तीन वर्षो तक रामपुर के उ. अताहुसेन खाँ से भी शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला ।

पं मुलगाँवकर ने मराठी भाषा में 'तबला' नामक अत्यन्त उपयोगी पुस्तक लिखकर संगीत जगत की महान सेवा की है । इस पुस्तक को महाराष्ट्र टेस्ट बुक बोर्ड, नागपुर से सन् १९७५ में प्रकाशित किया । आपने समय–समय पर अनेक कलाकारों से संबंधित कथाएं विभिन्न पत्रिकाओं के लिए लिखी हैं । आप आकाशवाणी, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय, एवं देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से किसी ने किसी रूप से जुडे हुए हैं । पं. मुलगाँवकर ने देश के विभिन्न भागों में भाषण, प्रदर्शन और सोलो वादन तथा कई प्रतिष्ठ कलाकारों के साथ संगत भी की हैं । १९९२ में महाराष्ट्र सरकार ने आपकों वाद्य

संगीत के लिए पुरस्कार किया । आप शिष्यों को गुरु–शिष्य परंपरा से शिक्षा भी दे रहे हैं । श्री मुलगाँवकर उ. अमीर हुसैन खाँ साहब की स्मृति में 'बंदिश' संस्था के संस्थापक सदस्य और अवैनतिक सचिव भी हैं ।'' [१८]

५ः२ः८ उ. अहमद जान थिरकवाँ

''उ. अहमद जान खाँ अपने उस्ताद 'थिरक्वाँ' के उप नाम से संगीत जगत में अधिक विख्यात हुये । आपका जन्म मुरादाबाद (उ.प्र.) में सन् १८९१ के लगभग संगीत के एक परिवार में हुआ । आपके पिता हुसेन बख्श खाँ, नाना कलन्दर बख्श खाँ, चाचा शेर खाँ व मामा फैयाज खाँ व बसवा खाँ गुणीं और प्रसिद्ध कलाकार थे । इन सभी से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात खाँ साहब ने मुंबई में उस्ताद मुनीर खाँ की शिष्यता ग्रहण कर ली और उनेक वर्षों तक उनकी देख–रेख में अभ्यास करते रहें ।

उ. अहमद जान की तबले पर थिरकती हुई गलियों के कारण उनको 'थिरक्वा' कहा जाने लगा और उसी उम्र से संगीत जगत में आपकी पहचान बनी । आपने प्रसिद्ध बाल गन्धर्व की 'महाराष्ट्र' नाटक कम्पनी में तबला–वादन करके अपार लोकप्रियता प्राप्त की । उस्ताद को रामपुर दरबार का राजाश्रय भी प्राप्त था । वहीं से वे भातखंडे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय लखनऊ में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हुये और जीवन के अंत तक लखनऊ में ही रहे । उस्ताद अहमद जान को देश के संगीतज्ञों के बीच आदर प्राप्त था । जीवन में उनको अनेक मान–सम्मान और उपाधियाँ मिली । उनमें से मुख्य सन् १९५३–५४ में राष्ट्रपति पुरस्कार और सन् १९७० में भारत सरकार द्वारा सम्मानजनक 'पद्मभूषण' मुख्य हैं । आपके जीवन पर एक वृत्तिचित्र भी बना हैं ।

उ. अहमद जान थिरक्वाँ चारो पट के तबलिये थे । आपको दिल्ली और फरुखाबाद घरानों की वादन शैली पर अद्‌भूत अधिकार था । आप अपने स्वतंत्र वादन के लिये अधिक जाने गये, जिस्में वे परंपरा निर्वाह पर अधिक केन्द्रित राग करते थे ।

उस्ताद की पढ़न्त विशेष आकर्षक थी । बाल्यकाल से ही आप कला में इतने तल्लीन रहे कि आप अपना नाम तक लिखना न सीख सके । उस्ताद के तीन पुत्रों का नाम नबीजान, मुहम्मद जान और अली जान हैं । आपके अपने शिष्य पूरे देश में फैले हुये हैं । उनमें से कुछ का नाम इस प्रकार है – सर्वश्री लालजी गोखले (पूणें), स्व. प्रेम बल्लभ (दिल्ली), स्व. पद्मभूषण निखिल घोष (मुंबई), सूर्यकान्त गोखले, एम. बी. भिडे, नारायणराव जोशी, मोहनलाल जोशी, प्रो. सुधीर वर्मा, अहमद मियां, सखत हुसेन, रामकुमार शर्मा आदि ।

खाँ साहब अपने जीवन के संध्यकाल में भी चुस्त–दुरुस्त रहा करते थे । आपने देश के सभी प्रतिष्ठित संगीत सम्मेलनों में भाग लिया तथा आकाशवाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रमों में अनेक बार प्रसारण किया । आपके सोलो वादन के कई ग्रामोफोन रिकार्ड उपलब्ध हैं । जिनसे आपके जीवन्त वादन की झलक आज मिलती हैं ।

उ. थिरक्वाँ अपने अन्तिम समय में कुछ दिनों के लिये मुम्बई चले गये थे । परन्तु आप लखनऊ से बेहद प्यार करते थे । अपने जीवन के संध्याकाल में वे अपनी दो ही इच्छा व्यक्त किया करते थे – एक कि जब तक जिन्दा रह तबला बजाता रहुँ और दो –कि अन्तिम सांस लखनऊ में ही लूं । माँ सरस्वती ने इस साधक पुत्र की दोनों इच्छायें पूरी की । खाँ साहब मोहरम करने लखनऊ आये । पूनः मुंबई जाने की तैयारी की, बच्चों को दुआयें दी, सवारी पर बैठे, खुदा हाफिज कहा और अलविदा हो गये । वह अशुभ दिन १३ जनवरी सन् १९७६ का था ।'' [१९]

५:२:९ पं. पंढरीनाथ नागेशकर

''देश के वयोवृद्ध तबला–वादकों के प्रथम पंक्ति में पं. पंढरीनाथ नागेश्कर का नाम श्रद्धापूर्वक लिया जाता है । सन् १९८८ में आपके ७५ वें जन्म दिवस समारोह के अवसर पर, 'दादर माटुंगा' कल्यरल सेन्टर मुंबई की और से आयोजित भव्य समारोह

को सम्बोधित करते हुये उ. अल्लारखाने आपकी कला और संगीत सेवाओं की अत्यंत दिल से प्रशंसा की और आपके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना की थी ।

पं. पंढरीनाथ जी का जन्म १७ मार्च १९१३ को नागेशी में हुआ । आपके पिता का नाम गंगाधर नागेशकर था । आपने तबला वादन की शिक्षा अपने चाचा पं. गणेश नागेशकर के अतिरिक्त श्री यशवंत विठ्ठल नायक 'बल्हेमामा', श्री सुब्बा राव अकोलकर तथा सोलह वर्षों तक उ. अमीर हुसैन खाँ सें प्राप्त की । खाँ साहब को मुंबई लाने और उनको स्थाई रूप से बसाने में भी उनका महत्व का योगदान था । आपको दिल्ली, फरुखाबाद और अजराडे घराने की वादन शैलियों पर विशेष अधिकार प्राप्त किया था ।

पं. नागेशकर ने उनके ऐतिहासिक महत्व के संगीतकारो के साथ संगत की थी, उनमें से कुछ के नाम हैं – सर्वश्री विलायत हुसेन खाँ, अजमत हुसेन खाँ, फैय्याज खाँ, अमीर खाँ, मन्जी खाँ, भुर्जी खाँ, सादिक हुसेन खाँ एवं सर्वश्री पं. वझे बुआ, हरिभाऊ घांघरेकर, शरदचंद्र आरोलकर, भास्करबुआ जोशी एवं श्रीमती हिराबाई बड़ोदेकर ।

गोवा की स्वतंत्रता दिवस समारोह पर १९ डिसम्बर १९८६ को तात्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने ९ मार्च, सन् १९९१ को 'मराठी कला अकादमी' ने आपको आपकी संगीत सेवाओं के लिये सम्मानित किया ।

पंडित जी के प्रमुख शिष्यों में आपके पुत्र श्री विभव नागेशकर के अतिरिक्त सर्वश्री वसंत आचेरकर, रामभाऊ वस्त, सुरेश तलवलकर, देवेन्द्र सोलंकी एवं अभय सुतार उल्लेखनीय हैं । आपका निघन २७ मार्च, २००८ को हो गया ।'' [२०]

५:२:१० पं. किरण देशपांडे

''आपका जन्म जबलपुर में सन् १९४० में संगीतज्ञ पं. एम. बी. देशपांडे के पुत्र के रुप में हुआ । आपके पिता मध्यम प्रदेश और विशेषतः जबलपुर के लिये एक वरदान सिद्ध हुये । आप ही के प्रयास सें जबलपुर में भातखंडे संगीत महाविद्यालय की स्थापना

हुई । श्री किरन देशपांडे ने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की । फिर आप भारत सरकार द्वारा प्रदत्त युवा प्रतिभाशाली छात्राओं को राष्ट्रीय छात्तवृत्ति योजना के अन्तर्गत हैदराबाद के सुप्रसिद्ध उ. शेख दाउद से तबले की विधिवत् शिक्षा प्राप्त की । आपने अंग्रेजी विषय सें स्नोकोत्तर परीक्षा भी उत्तीर्ण की ।

श्री देशपांडे ने सर्वप्रथम १९५५ में अमेरिका के पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय में जूनियर फेलोशिप प्राप्त कर 'आर्टिस्ट इन रेजीडेन्स' रहे । फिर समय–समय पर अनेक बार सात समुन्दर पार कर अपने तबले की थाप से विश्व के संगीत रसिकों को आनंदित करते रहे । १९५८ में किरन जी ने अन्तर विश्वविद्यालय युवा समारोह में भाग लेकर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया । आपने प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद द्वारा आयोजित प्रतियोगिता के विशेष वर्ग में सफलता प्राप्त कर पंडित अनोखेलाल स्मृति शिल्ड प्राप्त किया ।

मृदु भाषी और सरल स्वभाव के किरन जी विशेषतः गायकों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं । आपने अनेक श्रेष्ठ गायकों की कुशलतापूर्वक संगति करके वश प्राप्त की हैं । आप भोपाल के एक महिला महाविद्यालय में गायन के प्राध्यापक थे । आपके पुत्र श्री सुप्रित देशपांडे अपने पिता के पद चिन्हों पर अग्रसर हैं ।'' [२१]

५:२:११ पं. सुरेश (भाई) गायतोंडे

''आप का जन्म महाराष्ट्र में रत्नागिरी जनपद् के अन्तर्गत फनकादली नामक गाम में ६ मई सन् १९३२ को हुआ । संगीतज्ञो एवं संगीत प्रमियों के बीच आप भाई गायतोंडे के नाम से अधिक प्रसिद्ध हैं । आपके पिता पेशे से डॉक्टर थे और उनको तबला और हारमोनियम वादन में विशेष रुचि थे । भाई गायतोंडे के प्रारंभिक शिक्षक वही थे ।

सन् १९४२ में जब भाई की अवस्था मात्र १० वर्ष की थी तो उनके पिता कोल्हापुर चले गये । उस समग्र कोल्हापुर एक सम्पन्न रियारस थी और वह संगीत का

गढ था । अतः भाई को पं सुधाकर दिगराजकर, पं. रमाकांत बेदागकर, पं महमूलाल सनेगोकर और प्रसिद्ध तबला वादक उ बाल भाई रुकादिकर जैसे जेष्ठ संगीतज्ञों का सांनिध्य मिला और उनसे उन्होंने विद्या प्राप्त की । यह क्रम ९ वर्षो तक चला ।

परंतु भाई जब जगन्नाथ बुआ पुरोहित 'गुणीदास' के सम्पर्क में आये और गुरु शिष्य पद्धति सें १६ वर्षों तक कठिन साधना की तो उनके वादन में अद्‌भुत निखार आ गया । बोला का सही निकास, सही टोन, सफाई और तैयारी के सामेजस्य से उनको अन्य कलाकारों से पृथक बना दिया । पं पुरोहित एक कुशल गायक एवं गुणी तबला वादक थे । उनकी मृत्यु सन् १९६८ में हो गई ।

भाई को उ. अहमद् जान थिरकवा सें उ वर्षो तक तथा पं विनायक राव घांग्रेकर से १० वर्षो तक शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । विद्यार्जन में प्रगाढ़ रुचि रखने वाले भाई आज भी अपने ज्येष्ठ गुरुभाई पं लालजी गोखले से मार्गदर्शन लेते रहते हैं । भाई पं सुरेशभाई गायतोण्डे को उनकी श्रेष्ठता के प्रतीक स्वरुप निम्न सम्मान प्राप्त हुए हैं – १) सन् १९९२ में ताल विलास 'संगीत पीठ सुर सिंगार' संसद मुंबई ।

२) १९९३ में 'स्वर साधना समिति' द्वारा स्वर साधना रत्न सम्मान ।

३) सन् १९९३ में कोंकण कला भूषण महाराष्ट्र फिल्म, ड्रामा, म्यूझिक महामण्डल एवं कोंकण कला अकादमी के संयुक्त प्रयास से भाई को केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी द्वारा सम्मान भी प्राप्त हुआ हैं । आप देश के अतिरिक्त सिंगापुर, युनाईटेड किंगडम और अमेरिका की भी सांगीतिक यात्रा की ।'' [२२]

५:२:१२ उ. जहाँगीर खाँ

''आपका जन्म वाराणसी (उ.प्र.) में सन १८६९ के लगभग हुआ । आपके पिता जनाब अहमद खाँ एक अच्छे कलाकार थे । बालक जहाँगीर को सांगीतिक वातावरण परिवार में मिला । आपने तबले की शिक्षा का प्रारंभ अपने पिता के पास किया । आपने

जिन–जिन उस्तादों से शिक्षा ली, उन में से पटना के उ. मुबारक अली खाँ, बरेली के उ. छन्नु खाँ, दिल्ली के उ. फिरोजशाह और लखनौ के खलिफा आबिदहुसैन खाँ मुख्य है । इस प्रकार आपने तबले के सभी घरानों की वादन शैलीयों की विशेषताओं को आत्मसात किया । आप सभी कलाकारों के चहिते कलाकार थे । आपने अनेक श्रेष्ठ कलाकारों के साथ संगती की । आपके तबला वादन से प्रभावित होकर इन्दोर के महाराजा तुकोजीराव होलकर ने आपको लगभग सन् १९११ में अपने दरबार के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ नियुक्त किया । आप सन् १९५९ में राष्ट्रपति अवॉर्ड से सन्मानित किये गये । संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली ने आपको फेलोशिप प्रदान की । इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ ने आपको 'डॉक्टर ऑफ म्युझिक' की मानद उपाधि से सन्मानित किया । सन् १९५५ में 'अभिनव कला समाज' इन्दोर ने 'तबला नवाज' की उपाधि दी । आपने सैंकडो शिष्यों को उदार हाथ से तबले की शिक्षा दी । जिस में कुछ शिष्य में सर्वश्री नारायणराव इन्दुरकर, महादेवराव इन्दुरकर, स्व. चतुरलाल, नियाजू खाँ, महेबुब खाँ (पूणे), अब्दुल हफीज (उदयपुर), गजानन ताडे, रवी दाते आदि । ११ मई, सन् १९७६ को आपका देहांत हुआ ।'' [२३]

५:२:१३ उ. करामतउल्ला खाँ

''आपका जन्म सन् १९१८ में रामपुर (उ.प्र.) में व्यावसायिक संगीतज्ञों के एक प्रसिद्ध परिवार में हुआ । आपके पिता सुविख्यात उ. मसित खाँ फरुखाबाद घराने के उ. हाजी विलायत अली खाँ के शिष्य उ. नन्हे खाँ की शिष्य परंपरा में से थे । आपकी ६ वर्ष कि आयु में शिक्षा हुई । युवा होते ही आप कोलकता चले गये और अपना कार्यक्षेत्र बंगाल चुना और जीवनपर्यंत आकाशवाणी के कोलकता केन्द्र में स्टाफ कलाकार के रूप में सेवारत रहे । आप फरुखाबाद घराने की वादनशैली में माहिर थे । आप संगत भी खुबसूरती से करते थे । आपके स्वतंत्र तबला वादन का एक ई.पी. ग्रामोफोन रेकोर्ड भी

उपलब्ध है । जिस में आपने तिनताल, धमार और कहरवा ताल बजाया है । आपके प्रमुख शिष्यों में आपके पुत्र साबिर खाँ, श्री नरेन्द्र घोष, स्व. कन्हाई दत्त, कमलेश चक्रवर्ती आदि प्रमुख है । ३ दिसम्बर, सन् १९७७ को आपका कोलकता में निधन हुआ ।'' [२४]

५:२:१४ डॉ. आबान मिस्त्री

''मुंबई की मुल निवासी आप पारसी महिला है जिनको भारतीय संगीत की सभी विधाओं में माहिर थी परंतु तबला वादन में उतना ही आपका अधिकार था । आपका जन्म मुंबई में सन् १९४० में हुआ । आपने मात्र चार वर्ष कि आयु में अपनी मौसी से गायन सिखना शुरु किया । बाद में आपने पंडित लक्ष्मणराव बोडस जी से २७ वर्षो तक शिक्षा प्राप्त की । १३ वर्ष कि आयु में आप पं. केकी एस.जिजिना के संपर्क में आई । और उनसे सितार और तबला वादन की शिक्षा प्राप्त की । आपकी प्रतिभा को देखकर उ. अमीरहुसैन खाँ ने आपको शिक्षा देने का स्वीकार किया । अतः वर्षो तक आपने उस्तादजी से सभी घरानो की वादनशैली का गूढ अध्ययन किया । तथा मंचीय कार्यक्रम भी देती रही । आपने पखवाज वादन की शिक्षा पं. नारायणराव मंगलवेढेकर जी से प्राप्त की । आपने संगीत जगत को पुस्तक के रूप में 'पखवाज और तबला के घराने एवं परंपराएँ' भेंट दी । इसके लिये आपको गांधर्व महाविद्यालय मंडल ने 'संगीताचार्य' की उपाधि से अलंकृत किया । आपकी अन्य पुस्तक 'तबले की बंदिशें' है ।

आपने संपूर्ण भारत के अनेक शहरों में कार्यक्रम दिये । १९८३-८४ में यूरोपीय देशों में, १९८६ में दुबई और बहरिन में तथा १९८८ में भारत महोत्सव में भाग लेने के लिये रुस की यात्रा की । आप देश की अनेक शैक्षिक संस्थाओं से भी जुडी हुई थी । जिसके माध्यम से समय पर व्याखान, वर्कशोप और प्रदर्शन में आप भाग लेती रही । आपने इलाहाबाद में 'साहित्य रत्न' की परीक्षा उत्तीर्ण की । आपको 'तालमणि',

’चर्मवाद्य तबला भूषण‘, ’संगीत सेतु‘, ’संगीत कला रत्न‘ जैसी उपाधि से सन्मानित किया गया । आप मुंबई में ’स्वर साधना समिति‘ नामक संगीत संस्था से जुडी हुई थी । इस संस्था में मासिक कार्यक्रम की परंपरा आज भी चल रही है । आपका निधन एक लम्बी बिमारी के बाद सन् २०१२ को हुआ ।‘‘ [२५]

५ः२ः१५ पं. शंकर घोष

’’आपका जन्म सन् १९३५ में कोलकता में एक संगीत प्रेमी परीवार में हुआ । आपने तबला वादन की शिक्षा पं. ज्ञानप्रकाश घोष, उ. फिरोज खाँ, पं. अनाथनाथ बोस और पं. सुदर्शन अधिकारी से प्राप्त की । आप फरुखाबाद घराने के प्रतिनिधि कलाकार थे । आपने उ. अली अकबर खाँ, पं. रविशंकर, पं. निखिल बेर्नजी, श्रीमती सरन रानी, जोग साहब जैसे अनेक श्रेष्ठ कलाकारो के साथ अनेक बार विश्व के कई देशों की सफल यात्रा की । आपको उतकृष्ट तबला वादन के लिये सन् १९९९–२००० में संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली की ओर से पुरस्कृत किया गया । आपको आय.टी.सी. के संगीत रीसर्च अकादमी, कोलकता और उ. हाफिज अली खाँ अवॉर्ड से सन्मानित किया गया । आपने कोलकता के एक संगीत विद्यालय में लगभग ३० वर्षो तक शिक्षा दी । इसके अलावा आपने पेरिस, जर्मनी के स्कूलों में भी शिक्षा दी । आपके शिष्यों में आपके सुपुत्र श्री विक्रम घोष वर्तमान में एक प्रतिभाशाली कलाकार है । आपका निधन २२ जनवरी, २०१६ को हुआ ।‘‘ [२६]

५ः२ः१६ पं. नयन घोष

’’आप एकमात्र ऐसे कलाकार है जिनको तबला और सितार वादन दोंनो में ही दक्षता प्राप्त है और दोंनो वाद्यों में आप मंचीय कार्यक्रम भी देते है । आपका जन्म सन् १९५६ में एक संगीतज्ञों के प्रसिद्ध परीवार में हुआ । आपके पिता पद्मभूषण पं. निखिल

घोष प्रसिद्ध तबला वादक थे तथा ताऊ पं. पन्नालाल घोष सुप्रसिद्ध बांसुरी वादक थे । अतः आपको परीवार में सांगीतिक वातावरण मिला । आपने तबला वादन की शिक्षा पिताश्री पं. निखिल घोष जी तथा सितार वादन की शिक्षा पं. बुद्धदेवदास गुप्ता जी से प्राप्त की । आपने देश–विदेश में महत्वपूर्ण समारोह में भाग लिया है । आपने देश के अग्रणी कलाकारों के साथ संगती की है । आप फरुखाबाद घराने के प्रतिनिधी कलाकार है । आपने आकाशवाणी के विविध भारती के संगीत सरीता कार्यक्रम में तबला के विभिन्न ताले, बाज और घरानों पर विद्धवत्तापूर्ण प्रस्तुती की है । सन् २०१४ में आप को संगीत नाटक अकादमी ने पुरस्कृत किया । आपने संगीत के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से मुंबई में 'संगीत महाभारती' की स्थापना की । आपके शिष्यों में आपके सुपुत्र युवा कलाकार श्री ईशान घोष तथा श्री अनिष प्रधान प्रमुख है ।'' [२७]

५:२:१७ श्री आमोद दंडगे

''आपका जन्म कोल्हापुर में हुआ । आपने बी.ए. की पदवी राज्यशास्त्र विषय में ली है । तबले में आपने एम.ए. तथा संगीत अलंकार की पदवी हाँसिल की है । प्रारंभिक तबले का शिक्षण आपने उ. म्हमूलाल सांगावकर जी के पास लिया । बाद में आपने पं. अरविंद मुळगाँवकर जी के पास अनेक वर्षो तक फरुखाबाद घराने की तालिम पाई । आपने शिवाजी युनिवर्सीटी, कोल्हापुर में संगीत विभाग में सभी अभ्यासक्रम के लिये सात वर्ष अध्यापन कार्य किया है । इसके पश्चात कर्णाटक विद्यापीठ, गोवा विद्यापीठ, खैरागढ विद्यापीठ, पूणे विद्यापीठ, म.स.युनिवर्सीटी बडौदा जैसे अनेक शैक्षणिक संस्थाओं में परिक्षा समिति के आप सदस्य है । अखिल भारतीय गांर्धव महाविद्यालय मंडल, मुंबई के सुधारित अभ्यासक्रम में आपका विशेष योगदान है । आप १४ वर्षो से पुणे विद्यापीठ के ललितकला विभाग में मानद अध्यापक के रूप में कार्यरत है । आपने पं. आनंदबुवा लिमये, सुश्री श्रृति सडोलीकर, जयश्री पाटणेकर, पं. पंचाक्षरीबुवा, पं. विकास

कशाळकर, डॉ. राजा काळे, उ. उस्मान खाँ, पं. नित्यानंद हळदीपूर, पं. पुरुषोत्तम वालावलकर, पं. मनोहर चिमोटे जैसे अनेक दिग्गजों के साथ संगत की ।

भारत एवं विदेश में आपने अनेक शहरों में स्वतंत्र वादन के कार्यक्रम दिये है तथा अनेक विद्यार्थीओं को आप कार्यशाळा के माध्यम से ज्ञानवर्धन करते है । आपने वर्तमान में परीक्षार्थ तबला, सर्वांगीण तबला, पदव्युत्तर तबला जैसी विशारद तथा अलंकार के विद्यार्थीओं के लिये पुस्तके प्रकाशित की है । आपको कलांजलि संस्था द्वारा कोल्हापुर में आदर्श शिक्षक का अवॉर्ड प्राप्त है तथा सन् २०११ में 'सम संस्था', दिल्ली में 'संगीत रत्न' का पुरस्कार से सन्मानित किया गया है ।'' [२८]

पाद टिप्पणी :

(१) ऋषितोष, डॉ. कुमार, तबले का उद्‌गम एवं दिल्ली घराना, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, ISBN: 978-81-8457-645-0, पृ. ४८

(२) माईणकर, सुधिर, तबला वादन में निहित सौन्दर्य, सरस्वती पब्लिकेशन, मुंबई, पृ. २२६

(३) op.cit. ऋषितोष, डॉ. कुमार, पृ. ५५

(४) op.cit. ऋषितोष, डॉ. कुमार, पृ. ५६

(५) op.cit. ऋषितोष, डॉ. कुमार, पृ. ४८

(६) op.cit. ऋषितोष, डॉ. कुमार, पृ. ४९

(७) op.cit. ऋषितोष, डॉ. कुमार, पृ. ६६

(८) श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, ताल कोश, रुबी प्रकाशन, ईलाहाबाद, पृ. ३३६

(९) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. २०९

(१०) साक्षात्कार : करकरे, श्री प्रविण, बडौदा, ५ डिसेम्बर, २०१८,शाम ५ बजे

(११) साक्षात्कार : मोघे, पं. उमेश, बडौदा, २५ मार्च, २०१९,शाम ८ बजे

(१२) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. ३०४

(१३) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. २४७

(१४) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. २२९

(१५) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. २४०

(१६) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. २४८

(१७) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. १४

(१८) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. १९

(१९) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. २५

(२०) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. १९४

(२१) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. ५६

(२२) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. ३३८

(२३) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. १०१

(२४) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. ५०

(२५) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. ३१

(२६) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. ३०९

(२७) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. १८१

(२८) साक्षात्कार : श्री आमोद दंडगे, बडौदा, १३ मार्च, २०१८, सुबह ११ बजे